

राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

"अहाँक मनोभाव देख हमरा लगैए जे मनमे जातिवादक दुर्गन्ध अखनो धरि ऐछे तँए भूखलो छी तँ नै खाएब। जँ से नै रहैत तँ जाति-पातिसँ ऊपर उठि गाम-समाजक सभ वर्गकेँ नौत दऽ खिऐबतौं ने, सभ आनन्दित होइतए। सबहक प्रेम आ जश सेहो भेटितए। सभ तँ प्रेम आ भावक भूखल होइए नै कि भातक भूखल। जखन अपने लोककेँ नीच बुझै छिऐ तँए ने लोको अहाँकेँ नीच बुझलक।अपने कहने जँ लोक मड़र होइतए तँ सभ मड़रे ने कहाइबतै। जीविका लेल ने लोक अलग-अलग काज करैए। मुदासभ तँ मनुखे जाति ने छी। से जँ आबो नै बुझबै तँ साड़ामे जाइबेर बुझि की करबै। एतेक तँ खियाल राखै पड़त जहिना सभ जाति मिलि समाजमे सबहक काजमे मदैत करैए तहिना जँ सभ जाति मिलि खानो-पीन, मेलो-बेवहार करब तखन ने समाजमे आपसी प्रेम-भाव बढ़त। अही अभावक कारणे ने आइ धरि समाज पछुआएले अछि।"

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

"गाछपर बिसवास अछि जे ओ अपन गुण-धरमकेँ सोलहन्नी नै बदलैए मुदा मनुखकेँ बदलैमे तँ कोनो समैए ने लगै छइ। महेशकेँ कहै छी तँ कहैए छुट्टीए ने मिलैए। पुतोहु तेहेन अँठिलाहि अछि जे ठोर-पर-ठोर बैसबे ने करै छइ। जँ कहियो छुट्टी हेबो करै छै तँ नैहरेमे बितबैए। हमरा के देखैए। हम जेहेन केलौं से भोगि रहल छी, एहेन कष्ट तँ भगवान सात-घर दुश्मनोकेँ नै देथुन।"

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

पैघ विद्वान समीक्षक सभक मुँहपर जबाव के देतैन? जखन जबाव देनिहार जौं सरकारी नौकरी करैबला रहत तँ चक्रव्यूहमे फँसा खा जेता। जौं कहीं प्राइवेटमे नौकरी करैत हएत तँ कान पकैड़ हटबा देता। जौं कहीं अखवार, पत्रिका वा फेश-बुकपर किछु टिप्पनी करत तँ धमकीपर धमकी पड़ए लगत। तँए बाजबसँ चुप्पे भला बुझै छला।

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु

गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

"अहाँ सभ तँ असलमे अबसरवादी सामन्तवादी कमतिया छी सालमे तीन-चारि मास पानिक धनिक भेने दर्शन दइ छी, मुदा हम तँ बारहो मास सबहक सामने अपन समाजमे रहै छी। लोकक कल्याण करै छी। से केना सेहो सुनियौं लिअ- जखन रौदी भेने लोक जट-जटीन बरखा खातिर खेलैए तखैन उक्खैरमे दऽ हमरा समाठसँ कुटैए आ हम बेदमोमे बाजि-बाजि मेघकेँ बजबै छी आ बरखा होइ छइ। लोकक कल्याण होइ छइ। हम केना ने लोकक हित-कल्याण लेल तियाग आ बलिदान करै छी? छैथ कियो हमरा सन तियागी, तँ हुनका सामने आनू, हुनके महंथी सभ मिलि दऽ देबैन।"

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक प्रकाशन

जखन बुझै छिऐ जे डोम समाजक लेल एते पैघ लोक छै, बिना डोमक आगिसँ लोककेँ मरलोमे मुक्ति नइ भेटै छै, तखन डोमकेँ एते निच्चाँ किए बुझै छिऐ...। जखन कि जीबैतमे सभ डोमसँ छुबाइ छी, आ मुइलापर पैघ बुझै छी...। डोमो तँ अही समाजक लोक छी, मुदा गामसँ हटि कऽ वेचारा सभ गाममे बसैए। सभ कियो ओकरा अछोप बुझि आइ धरि लग बैस खेनाइ तँ दूर जे बातो ने करैए। एक लग्गा फटिकेसँ पुछ-पाछ करैए...। ऐबेरमे कोन असोकर्ज हुअ लगैए...।

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)